अध्याय 20

पाप और मृत्यु

यात्रा की योजना में अड़तीस वर्ष देरी के बाद, इस्राएली लोग एक बार फिर से यात्रा के लिए तैयार हैं। यह अध्याय कादेश की अंतिम घटनाओं और इस्राएलियों का होर पर्वत की ओर यात्रा का पुनः वर्णन प्रस्तुत करता है।

मरियम की मृत्यु (20:1)

[1]पहले महीने में सारी इस्राएली मण्डली के लोग सीनै नामक जंगल में आ गए, और कादेश में रहने लगे; और वहाँ मरियम मर गई, और वहीं उसको मिट्टी दी गई।

आयत 1. पाप और मृत्यु की यह कथा **इस्राएली मण्डली के लोगों का सीनै नामक जंगल में** आने के बाद आरंभ होती है। यह घटना **पहले महीने में** घटी, यद्यपि वर्ष निर्दिष्ट नहीं किया गया है। इस समय **लोग कादेश में रहने लगे थे**। यह वही स्थान है जहाँ **मरियम की मृत्यु हुई और वहीं उसको मिट्टी दी गई थी**।

यह आयत 12:16 के बाद इस्राएलियों की सारी मण्डली की गतिविधि की ओर संकेत करती है, जहाँ यह बताया गया है कि वे "पारान के जंगल" में आ गए थे। जब भेदिए भेजे गए थे, उन्होंने "सीन नामक जंगल" से आरंभ करके भूमि का सर्वेक्षण किया था (13:21)। संभवतः पारान का जंगल, सीन नामक जंगल से सटा हुआ था। गिनती 33:36 कहता है, "एस्योनगेबेर से कूच करके उन्होंने सीन नामक जंगल के कादेश में डेरा किया," जो यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि कादेश सीन के जंगल में स्थित था।[1] गिनती 13:26 भी कहता है कि इस्राएली "पारान जंगल के कादेश नामक स्थान में" थे। चूँकि "कादेश," "सीन" और "पारान" दोनों जंगलों से संबंधित है, तो इससे यह स्पष्ट होता है कि यह दोनों जंगलों की सीमा रेखा पर स्थित था। सीन का जंगल कनान के दक्षिणी और पारान की उत्तरी भाग में स्थित था जो दक्षिण की ओर सीनै प्रायद्वीप तक फैला हुआ था।

स्पष्टतया, परमेश्वर की आज्ञानुसार, अध्याय 20 के आरंभ में इस्राएली लोग कादेश छोड़कर जंगल की यात्रा की ओर निकल चुके थे (14:25; व्यव. 1:40)। इसकी भी संभावना जताई जाती है कि उनके जंगल यात्रा के दौरान, इस्राएली लोगों ने - या तो पूरी मण्डली या झुंडों में - कादेश के दक्षिणी भाग की ओर यात्रा की और फिर वे वहाँ वापस लौट आए थे, और उस दौरान उन्होंने कादेश को अपनी

गतिविधि का केंद्र बनाया था (देखें व्यव. 1:46)। उन्होंने लगभग चालीस वर्षों तक जंगल भ्रमण किया था (14:32-35)। अब तक, जंगल भ्रमण के बाद वे अपने आरंभिक स्थान - कादेश, पहुँच चुके थे, जहाँ से वे प्रतिज्ञा की देश की ओर प्रस्थान करने वाले थे।[2]

उनकी सीन पहुँचने की तिथि "पहले महीने में" थी। इसकी संभावना है कि मूल प्रतिलिपि में, वर्ष अंकित किया गया था लेकिन लिपिकारों की त्रुटि के कारण, कालांतर की प्रतिलिपियों में यह वर्ष नहीं पाया जाता है। किसी भी परिस्थिति में, यह समय लगभग तय है कि यह इस्राएलियों के जंगल में प्रवास का अंतिम वर्ष रहा होगा। गिनती 33:38, 39 स्पष्ट करता है कि हारून की मृत्यु इस्राएलियों के मिस्र से निर्गमन के पश्चात "चालीसवें वर्ष" के "पाँचवें महिने के पहले दिन" को हुई थी। तो यह मानना तर्क संगत है कि मरियम की मृत्यु उसी वर्ष के प्रथम महिने में हुई होगी।

इस्राएली लोग अपने चालीस वर्षों के जंगल प्रवास के अंतिम चरण में पहुँच चुके थे, के लिए यदि किसी प्रकार के प्रमाण की आवश्यकता है तो वह यह है कि इस्राएलियों की एक प्रमुख नायिका मरियम की मृत्यु हो चुकी थी और उसे कादेश में गाड़ा गया था। पुरानी पीढ़ी समाप्त हो रहा था! मरियम के भाई हारून की तुलना में, उसकी मृत्यु की विलाप की अवधि का वर्णन नहीं किया है (20:29)। हो सकता है कि यह उसके पूर्वकालीन बलवा के दाग के कारण ऐसा हुआ हो। यद्यपि, इस बात को वह मूसा और हारून की बहन और एक अगुआ और भविष्यवक्तिन थी, की महत्ता को कोई मिटा नहीं सकता है (निर्गमन 15:20, 21)।

इस्राएलियों का कुड़कुड़ाना, मूसा और हारून का पाप (20:2-13)

यह अनुभाग, इस्राएलियों का कुड़कुड़ाना और मूसा और हारून ने किस तरह परमेश्वर की योजना के अनुसार उसके लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति न करके पाप किया, के कथांश से सम्बन्धित हैं।

शिकायत और अगुओं की प्रतिक्रिया (20:2-8)

[2]वहाँ मण्डली के लोगों के लिये पानी न मिला; इसलिये वे मूसा और हारून के विरुद्ध इकट्ठे हुए। [3]और लोग यह कहकर मूसा से झगड़ने लगे, "भला होता कि हम उस समय ही मर गए होते जब हमारे भाई यहोवा के सामने मर गए! [4]और तुम यहोवा की मण्डली को इस जंगल में क्यों ले आए हो कि हम अपने पशुओं समेत यहाँ मर जाएँ? [5]और तुम ने हम को मिस्र से क्यों निकालकर इस बुरे स्थान में पहुँचाया है? वहाँ तो बीज, या अंजीर, या दाखलता, या अनार, कुछ नहीं है, यहाँ तक कि पीने को कुछ पानी भी नहीं है।" [6]तब मूसा और हारून मण्डली के सामने से मिलापवाले तम्बू के द्वार पर जाकर अपने मुँह के बल गिरे। और यहोवा का तेज उनको दिखाई दिया। [7]तब यहोवा ने मूसा से कहा, [8]"उस लाठी को ले,

और तू अपने भाई हारून समेत मण्डली को इकट्ठा करके उनके देखते उस चट्टान से बातें कर, तब वह अपना जल देगी; इस प्रकार से तू चट्टान में से उनके लिये जल निकाल कर मण्डली के लोगों और उनके पशुओं को पिला।"

आयत 2. यह घटना इस वक्तव्य के साथ आरंभ होती है कि वहाँ मण्डली के लोगों के लिये पानी न मिला। कादेश में पानी न होने से एक गम्भीर समस्या उत्पन्न हो गई थी। इस क्षेत्र में तीन जलाशय थे और पानी की उपलब्धता *के कारण* लोगों ने वहाँ डेरा डाला था।

इस स्थान पर पानी क्यों नहीं था? किसी कारणवश, कादेश का झरना सूख गया था। इस्राएली लोगों का, उनके जानवरों के साथ, एक बहुत बड़ी संख्या में होना, कुछ समयांतराल में झरने के सूखने का कारण समझा जा सकता है।

आयत 3. जैसा होता आया है, लोग **एकत्रित** होकर **मूसा से झगड़ने लगे।** अन्य बातों के बीच उन्होंने कहा, "**भला होता कि हम उस समय ही मर गए होते जब हमारे भाई यहोवा के सामने मर गए!**" ऐसा लगता है कि वे उस पुरानी पीढ़ी को, जो मिस्र से निर्गमन के पश्चात अलग-अलग अवसरों पर बलवा करने के कारण, जिनको परमेश्वर ने मार डाला था, संदर्भित कर रहे थे (11:33, 34; 14:39-45; 16:31-35, 41-50)। इस अवसर पर जिन प्रधानों ने झगड़ा किया वे उस पीढ़ी के संग रहे होंगे जिनको मृत्युदण्ड दिया गया था। अन्यथा, संभवतः उन्होंने "हमारे भाई" की जगह "हमारे पिता" कहा होता।

आयत 4. उन्होंने फिर से शिकायत की कि उनको उनके जानवरों के साथ **इस जंगल में ... मरने** के लिए लाया गया है (देखें 16:13; निर्गमन 14:11, 12)। उन्होंने कहा कि मूसा ने जैसे उनसे पहले प्रतिज्ञा की थी, उसके अनुसार वह उनको अच्छी भूमि पर नहीं लाया है।

आयत 5. वे कुड़कुड़ाए कि उस **बीज, या अंजीर, या दाखलता, या अनार** नहीं पाया जाता था (देखें 11:4-6, 18), और वहाँ **पीने** के लिए **पानी** भी नहीं था (देखें निर्गमन 15:22-25; 17:1-7)।

आयत 6. मूसा और हारून, मिलापवाले तम्बू के द्वार पर जाकर, **मुँह के बल गिरे**, और **मण्डली** को उत्तर दिया। इस प्रकार उन्होंने मण्डली के उपद्रवी स्वभाव के प्रति पछतावा प्रकट करते हुए परमेश्वर से सहायता मांगी। इस समय **यहोवा का तेज उनको दिखाई दिया।**

आयतें 7, 8. परमेश्वर ने **मूसा** और **हारून** से कहा कि वे **लाठी लेकर** मण्डली की उपस्थिति में **चट्टान से बातें करें।** उनके आज्ञा मानने पर, **चट्टान पानी देगी** और **मण्डली के लोग और उनके पशु** पानी पी सकेंगे।

हम यह सोचकर अचिंभित हो सकते हैं कि परमेश्वर इन शिकायतों को हल्के में कैसे ले सकता है। उनके लिए उपाय करने के बजाय परमेश्वर ने उन्हें नाश क्यों नहीं किया, बल्कि वह तो उनके शिकायतों का प्रतिफल दे रहा था?

एक साधारण उत्तर यह है कि परमेश्वर "यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करुणामय और सत्य" है (निर्गमन

34:6)। दूसरा संभावित उत्तर इस शिकायत के समय से संबंधित है। पिछले विद्रोह के बाद कई वर्ष गुजर चुके थे। संभवतः परमेश्वर लोगों को क्षमा करने के लिए, जो शिकायत करने के परिणाम भूल चुके थे, के प्रति अधिक कृपालु था। एक और संभावना यह है कि अधिकांश विद्रोही लोग जवान पीढ़ी के थे (चूँकि अधिकांश पुरानी पीढ़ी समाप्त हो चुकी थी)। अभी शिकायत करने वाले अधिकांश लोग, उन लोगों में से नहीं थे जो पहले कुड़कुड़ाए थे। इस कारण परमेश्वर उनसे अधिक धीरजवंत था। इस समय उसकी यह इच्छा थी कि वह उनके निवेदनों की पूर्ति करके उस पर उनके विश्वास को दृढ़ कर सके।

मूसा और हारून की प्रतिक्रिया और परमेश्वर का त्यागना (20:9-13)

**9यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने उसके सामने से लाठी को ले लिया।
10मूसा और हारून ने मण्डली को उस चट्टान के सामने इकट्ठा किया, तब मूसा ने
उस से कहा, "हे दंगा करनेवालो, सुनो; क्या हम को इस चट्टान में से तुम्हारे लिये
जल निकालना होगा?" 11तब मूसा ने हाथ उठाकर लाठी चट्टान पर दो बार मारी;
और उसमें से बहुत पानी फूट निकला, और मण्डली के लोग अपने पशुओं समेत
पीने लगे। 12परन्तु मूसा और हारून से यहोवा ने कहा, "तुम ने जो मुझ पर विश्वास
नहीं किया, और मुझे इस्राएलियों की दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया, इसलिये तुम
इस मण्डली को उस देश में पहुँचाने न पाओगे जिसे मैं ने उन्हें दिया है।" 13उस
सोते का नाम मरीबा पड़ा, क्योंकि इस्राएलियों ने यहोवा से झगड़ा किया था, और
वह उनके बीच पवित्र ठहराया गया।**

आयत 9. कहानी यह बताती है कि जैसा उसे करने के लिए कहा गया था वैसे ही **मूसा ने लाठी को लिया**। इस बात पर प्रश्न उठाया जाता है कि आखिर मूसा को किसकी "लाठी" लेनी थी। परमेश्वर ने केवल इतना कहा, "लाठी लो" (20:8), और तब आयत 9 यह कहता है कि **उसके सामने से** "मूसा ने लाठी लिया।" इन वाक्यांशों में "लाठी" हारून की लाठी है, जब उसको महापवित्र स्थान में रखा गया था तो उसमें से कलियाँ उगी थी (17:10)। यद्यपि, आयत 11 यह कहती है कि मूसा ने "हाथ उठाकर *[अपनी]* लाठी चट्टान पर दो बार मारी" (तिरछे अक्षरों वाले शब्द पर विशेष जोर दिया गया है)। इस वाक्य से ऐसा प्रतीत होता है कि मूसा ने अपनी ही लाठी को लिया था, जिसको पहले भी कई बार आश्चर्यक्रम दिखाने के लिए प्रयोग किया गया था (निर्गमन 4:2-4, 17, 20; 7:15, 17, 20; 9:23; 10:13; 14:16-18; 17:5, 6)।

आयतें 10, 11. मूसा और हारून ने मण्डली को उस चट्टान के सामने इकट्ठा किया, और फिर मूसा ने उनसे कहाः **"हे दंगा करनेवालो, सुनो; क्या हम को इस चट्टान में से तुम्हारे लिये जल निकालना होगा?"** इस प्रश्न में, विशेषकर "हम" शब्द यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि मूसा और हारून ने परमेश्वर के सेवक के रूप में अपनी भूमिका को भुला दिया था। वे परमेश्वर के ईश्वरीय कार्य का श्रेय स्वयं ले

रहे थे।

तब मूसा ने हाथ उठाकर लाठी चट्टान पर दो बार मारी, जिसका यह परिणाम निकला कि बहुत **पानी** फूट निकला, **और मण्डली के लोग अपने पशुओं समेत पीने लगे**। एक बार फिर से परमेश्वर ने प्यासा किन्तु अकृतज्ञ लोगों को आश्यचर्यजनक रूप से पानी उपलब्ध कराया (देखें निर्गमन 17:1-7)।

आयत 12. मूसा और हारून के कार्य ने परमेश्वर को यह कहने के लिए प्रेरित किया, **"तुम ने जो मुझ पर विश्वास नहीं किया, और मुझे इस्राएलियों की दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया, इसलिये तुम इस मण्डली को उस देश में पहुँचाने न पाओगे जिसे मैं ने उन्हें दिया है।"**

परमेश्वर ने मूसा और हारून को इस तरह क्यों झिड़का? इस प्रश्न के कई उत्तर दिए गए हैं। फिलिप जे. बड ने कहा कि मूसा के पाप को "अविश्वास," "अनेच्छा," "जल्द बाजी या बुरी इच्छा" और "अनाज्ञाकारिता" के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

> बहुधा, आयत 8 की आज्ञा (बातें करने) की तुलना में, आयत 11 की आज्ञाकारिता को कार्य (मारने) के रूप में समझा जाता है ... ऐसा प्रस्तावित किया गया है कि मूसा को प्रार्थना करना चाहिए था ..., लेकिन यह अस्पष्ट है कि प्रार्थना या इसकी कमी वास्तविक समस्या है।
>
> इन सुझाओं में आयत 8 की आज्ञा और आयत 11 का कार्य के बीच तनाव की अधिक संभावनाएं हैं ...। [मूसा के कार्य] का सामान्य प्रभाव यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि उन्होंने [मूसा और हारून] यहोवा की पूर्ण सामर्थ को लोगों पर प्रकट होने में बाधा डाली और इस प्रकार उन्होंने उसको मिलने वाला भय व आदर से लूटा ...। भाषण अनावश्यक है, और यह यह दावा करता है कि पानी परमेश्वर नहीं बल्कि वे उपलब्ध करा रहे थे। इस घमण्ड में, वे यहोवा पर विश्वास और उसके प्रति आदर जगाने में असफल रहा।[3]

ऐसा प्रतीत होता है कि मूसा (और हारून) के पाप में तीन अपराध सम्मिलित हैं। (1) अनाज्ञाकारिता। परमेश्वर ने "बातें" करने के लिए कहा, लेकिन मूसा ने "मारा" (20:11, 12) यदि मूसा ने वास्तव में परमेश्वर पर विश्वास किया होता, तो उसने उसकी आज्ञा मानी होती। मूसा की अनाज्ञाकारिता और यह विचार कि उसने विश्वास नहीं किया के बीच संबंध में हमें यह देखने को मिलता है कि ये दोनों बातें लगभग एक ही है।[4] (2) परमेश्वर को महिमा देने में असफल होना। मूसा ने कहा "... क्या *हम* को इस चट्टान में से तुम्हारे लिये जल निकालना होगा ...?" (20:10; बल दिया गया है)। ऐसा लगता है कि चट्टान से पानी निकालने का श्रेय परमेश्वर को देने के बजाय मूसा और हारून स्वयं लेना चाहते थे। (3) तरस की कमी। इस अध्याय के अधिकांश भाग में, कुड़कुड़ाने वाली नई पीढ़ी के लोग थे; ये वे लोग नहीं थे जिन्होंने पहले भी पानी की कमी की शिकायत की थी। इसलिए परमेश्वर ने उन्हें दण्डित नहीं किया, बल्कि उनके आवश्यकता की पूर्ति की। मूसा को उनके प्रति परमेश्वर की दृष्टिकोण के बारे में बताना चाहिए था। इसके विपरीत,

वह अधीर व कठोर हो गया था, उसने उन्हें "दंगा करने वाले" करके संबोधित किया। चूँकि मूसा, परमेश्वर के तरस का भागी नहीं बना, तो उसको कनान देश में प्रवेश न करने देने के दण्ड से दण्डित किया जबकि "दंगा करने वालों" को उस देश में प्रवेश करने दिया गया (20:10)।

आयत 13. परमेश्वर के उपाय के साथ इस्राएलियों की असंतुष्टि और क्योंकि यहोवा **उनके बीच पवित्र ठहराया गया**, को यादगार बनाने के लिए, उस **सोते का नाम मरीबा**, जिसका अर्थ "वाद-विवाद" या "झगड़ा" है, पड़ा। इससे पहले जब परमेश्वर ने चट्टान से पानी उपलब्ध कराया था तो उस स्थान का नाम "मस्सा और मरीबा [पड़ा], क्योंकि इस्राएलियों ने वहाँ वाद-विवाद किया था, और यहोवा की परीक्षा यह कहकर की" (निर्गमन 17:7)। हमें इन दोनों में "मरीबा" के बीच विभेद करना होगा। व्यवस्थाविवरण 32:51 में गिनती 20 की "मरीबा" को "कादेश का मरीबा" कहा गया है (देखें यहेज. 47:19; 48:28), जो निर्गमन 17 की "मरीबा" से इसे पूरी तरह विभेद करता है, जिसका विवरण व्यवस्थाविवरण 33:8 और भजन संहिता 95:8 में भी है। यह तथ्य कि अलग-अलग स्थानों को एक ही नाम से संबोधित किया है, हमको अचरज में न डाले।

इस्राएलियों का निवेदन कि उन्हें एदोम से होकर जाने दिया जाय, का ठुकराया जाना (20:14-21)

[14]फिर मूसा ने कादेश से एदोम के राजा के पास दूत भेजे, "तेरा भाई इस्राएल यों कहता है: हम पर जो-जो क्लेश पड़े हैं वह तू जानता होगा; [15]अर्थात् यह कि हमारे पुरखा मिस्र में गए थे, और हम मिस्र में बहुत दिन रहे; और मिस्रियों ने हमारे पुरखाओं के साथ और हमारे साथ भी बुरा बर्ताव किया; [16]परन्तु जब हम ने यहोवा की दोहाई दी तब उसने हमारी सुनी, और एक दूत को भेजकर हमें मिस्र से निकाल ले आया है; इसलिये अब हम कादेश नगर में हैं जो तेरी सीमा ही पर है। [17]अतः हमें अपने देश में से होकर जाने दे। हम किसी खेत या दाख की बारी से होकर न चलेंगे, और कुओं का पानी न पीएँगे; सड़क-सड़क होकर चले जाएँगे, और जब तक तेरे देश से बाहर न हो जाएँ, तब तक न दाहिने न बाएँ मुड़ेंगे।" [18]परन्तु एदोमियों ने उसके पास कहला भेजा, "तू मेरे देश में से होकर मत जा, नहीं तो मैं तलवार लिये हुए तेरा सामना करने को निकलूँगा।" [19]इस्राएलियों ने उसके पास फिर कहला भेजा, "हम सड़क ही सड़क चलेंगे, और यदि हम और हमारे पशु तेरा पानी पीएँ, तो उसका दाम देंगे, हम को और कुछ नहीं, केवल पाँव-पाँव चलकर निकल जान दे।" [20]परन्तु उसने कहा, "तू आने न पाएगा।" और एदोम बड़ी सेना लेकर भुजबल से उसका सामना करने को निकल आया। [21]इस प्रकार एदोम ने इस्राएल को अपने देश के भीतर से होकर जाने देने से इनकार किया; इसलिये इस्राएली उसकी ओर से मुड़ गए।

आयतें 14-17. मूसा के पाप का विवरण के बाद, कहानी इस्राएलियों के आगे की यात्रा का विवरण प्रस्तुत करता है। एदोम देश से होते हुए कनान की ओर जाने के लिए **मूसा ने कादेश से एदोम के राजा के पास दूत भेजे** (20:14)। चूँकि यह "कादेश," एदोम देश की क्षेत्र के सीमा पर स्थित था तो क्या यह कादेशबर्ने से भिन्न था? क्या एदोम देश का क्षेत्र कादेशबर्ने तक फैला हुआ था? क्या जिस कादेश का यहाँ विवरण प्रस्तुत किया गया है वह सुदुर पूर्व में था?[5] आयत 14 में वर्णित कादेश, वही स्थान हो सकता है जिसका विवरण आयत 1 में सीन के जंगल में किया गया है, और जिसकी अधिक संभावना यह है कि वह स्थान कादेशबर्ने ही था।

मूसा ने एदोम के राजा से उसके क्षेत्र में से होकर उन्हे जाने देने के लिए निम्न आधार पर विनती कीः

1. इस्राएल और एदोम के बीच संबंध। मूसा ने एदोम को **भाई** करके संबोधित किया (20:14)। एदोम के लोग एसाव के वंशज थे और इस्राएल के लोग, उसका जुड़वा भाई याकूब के वंशज थे (उत्पत्ति 25:21-26; 36:1-43)।

2. इस्राएल का इतिहास और उनकी वर्तमान आवश्यकता। इस्राएलियों ने **क्लेश** सहे; **मिस्र** में उनके साथ **बुरा बर्ताव** किया गया, **यहोवा** ने उनको वहाँ से छुड़ाया, और अब वे **कादेश** में, अपने अंतिम मंज़िल की ओर जाने के लिए तैयार हैं (20:14-16)। वाक्यांश **तू जानता है** यह संकेत करता है कि एदोम के लोग इस्राएल की गतिविधियों से भली भाँति परिचित थे। इन परिस्थितियों ने उनके भाइयों एदोम वासियों के हृदय में उनके प्रति स्थान बना लिया होगा।

3. इस देश से गुजरते समय इस्राएलियों का सावधानी बरतना। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि वे **किसी खेत वा दाख की बारी से हो कर न चलेंगे** या **कूओं का पानी न पीएंगे**। उन्होंने कहा कि वे **सड़क-सड़क हो कर चले जाएंगे**, जो संभवतः दमिश्क से अरब की ओर जाने वाला व्यापार मार्ग था। इस प्रकार, वे एदोम देश में घुसपैठिए नहीं होंगे, वे **न दाहिने न बाएं मुड़ेंगे** और देश को किसी भी तरह से नुक्सान नहीं पहुँचाएगें। इन निवेदनों में शिष्टाचार है, यह निवेदन समझाने बुझाने वाला जान पड़ता है।

आयतें 18-21. एदोम के राजा ने उन्हें रास्ता देने से मना किया, यदि वे निकट आए तो वह उन पर चढ़ाई करने की धमकी दे रहा था, वह उनके विरूद्ध **तलवार लिये हुए उनका सामना करने को निकलेगा** (20:18)। फिर से इस्राएलियों ने एदोम देश से होकर जाने की विनती की, इस बार उन्होंने एदोम के राजा को यह आश्वासन दिया कि वे उसके देश को किसी भी तरह से हानि नहीं पहुँचाएंगे और यदि उन्होंने वहाँ का पानी भी पीया तो वे उसका दाम चुकाएंगे (20:19)। इसके बावजूद, उनको बुरी तरह से झिड़का गया। वस्तुतः, एदोम ने अपनी सेना तैनात की, **एक बड़ी सेना लेकर भुजबल से उसका सामना किया**, वे उसके सीमा पर इस्राएलियों को दूर रखने के लिए तैनात किए गए (20:20)। एदोम के इनकार करने के कारण, **इस्राएल उसकी ओर से मुड़ गए** (20:21)।

संभवतः इस भाग को यह प्रकट करने के लिए लिख दिया गया होगा कि यद्यपि

इस्राएल अंत में प्रतिज्ञा किए हुए देश में विजय प्राप्त कर लेगा और वहाँ के निवासियों को निकाल देगा, लेकिन वे लड़ाकू स्वभाव के लोग नहीं होंगे। कनान देश की ओर मार्ग में, उन्होंने दूसरे देशों के साथ शान्तिपूर्ण ढंग से व्यवहार किया और उन्होंने केवल उनके साथ युद्ध किया, जिन्होंने उन पर आक्रमण किया था। इस मामले में, जब उनके सामने युद्ध या लंबे मार्ग से होकर जाने का विकल्प रखा गया, तो उन्होंने लंबे मार्ग से होकर जाना उचित समझा।

हारून का प्रतिस्थापन और मृत्यु (20:22-29)

**22तब इस्राएलियों की सारी मण्डली कादेश से कूच करके होर नामक पहाड़
के पास आ गई। 23और एदोम देश की सीमा पर होर पहाड़ में यहोवा ने मूसा और
हारून से कहा, 24"हारून अपने लोगों में जा मिलेगा; क्योंकि तुम दोनों ने जो
मरीबा नामक सोते पर मेरा कहना छोड़कर मुझ से बलवा किया है, इस कारण
वह उस देश में जाने न पाएगा जिसे मैं ने इस्राएलियों को दिया है। 25इसलिये तू
हारून और उसके पुत्र एलीआज़ार को होर पहाड़ पर ले चल; 26और हारून के वस्त्र
उतारके उसके पुत्र एलीआज़ार को पहिना; तब हारून वहीं मरकर अपने लोगों में
जा मिलेगा।" 27यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने किया; और वे सारी
मण्डली के देखते होर पहाड़ पर चढ़ गए। 28तब मूसा ने हारून के वस्त्र उतारके
उसके पुत्र एलीआज़ार को पहिनाए और हारून वहीं पहाड़ की चोटी पर मर गया।
तब मूसा और एलीआज़ार पहाड़ पर से उतर आए। 29और जब इस्राएल की सारी
मण्डली ने देखा कि हारून का प्राण छूट गया है, तब इस्राएल के सब घराने के
लोग उसके लिये तीस दिन तक रोते रहे।**

आयत 22. इस्राएली मण्डली **कादेश से कूच करके होर नामक पहाड़ के पास आ गई**। इस पहाड़ की ठीक स्थिति ज्ञात नहीं है। कई संभावनाओं पर चर्चा करने के बाद, टिमोथी आर. एशली ने सबसे संभावित निष्कर्ष निकाला कि यह स्थान "जेबेल मदुराह से लगभग 15 मील की दूरी पर कादेश की उत्तर पूर्व" सीमा में स्थित हो सकता है, जो "अराद की ओर जाने वाले मार्ग में स्थित था (21:1-3)।"[6]

आयतें 23, 24. होर पहाड़ पर, **एदोम देश की सीमा पर**, परमेश्वर ने **हारून** की होने वाली मृत्यु की घोषणा की। मूसा के भाई और उसका प्रवक्ता **अपने लोगों में जा मिलेगा** और उसे प्रतिज्ञा की देश में नहीं प्रवेश करने दिया जाएगा। पुराने नियम में "अपने लोगों में जा मिलेगा," मृत्यु के लिए प्रयोग किया जाने वाला सामान्य मुहावरा है (उत्पत्ति 25:8, 17; 35:29; 49:33; गिनती 27:13; व्यव. 32:50)। ऐसा प्रतीत होता है कि इस मुहावरे की उत्पत्ति पारिवारिक कब्र में मुर्दों को गाड़ने के अभ्यास से आरंभ हुई होगी।

परमेश्वर का न्याय **मरीबा नामक सोते पर** बलवा करने के कारण आया। यह कड़ी इस अध्याय में इससे पूर्व की घटना को संदर्भित करता है, जहाँ परमेश्वर के

आश्चर्यकर्म का श्रेय मूसा और हारून ने लिया। 20:12 में परमेश्वर ने उनसे कहा कि उनके पाप के कारण, वे इस्राएल को प्रतिज्ञा की देश में नहीं ले जा सकेंगे। 20:13 में, जो पानी चट्टान से निकला उसको "मरीबा का सोता" कहा गया क्योंकि वहाँ लोगों ने "यहोवा से झगड़ा" किया था।

आयतें 25-27. मूसा को **हारून और उसके पुत्र एलीआज़ार को होर पहाड़ पर ले** जाने का आदेश दिया गया। पहाड़ की चोटी के निकट, उसको हारून के महायाजक वाले **वस्त्र उतारना** था और उसको **उसके पुत्र एलिआज़ार** को पहनाना था, जो इस बात का द्योतक होता कि अब एलिआज़ार महायाजक के रूप में प्रतिस्थापन हो चुका है। मूसा ने वैसा ही किया जैसा उसको **मण्डली के सामने** करने के लिए कहा गया था। हारून की मृत्यु से पहले इस विशिष्ट वस्त्र का हस्तांतरण ने एलिआज़ार को शव के संपर्क में आकर अशुद्ध होने से बचाए रखा।

आयतें 28, 29. महायाजकीय वस्त्र के हस्तांतरण के पश्चात, **वहीं पहाड़ की चोटी पर हारून मर गया।** मिस्र से निर्गमन के समय उसकी आयु "तिरासी वर्ष" थी (निर्गमन 7:7), और इस्राएल जंगल में चालीस वर्षों तक भ्रमण करता रहा (33:38)। इसलिए, वह "एक सौ तेईस" वर्ष की आयु में मरा (33:39)।

मूसा और एलीआज़ार पहाड़ पर से उतर आए और इस्राएल की पूरी मण्डली ने हारून की मृत्यु पर **तीस दिनों** तक विलाप किया। विलाप की सामान्य अवधि सात दिन की होती थी (उत्पत्ति 50:10; 1 इतिहास 10:12)। "तीस दिन" का विलाप, हारून की उच्च स्थिति को दर्शाता है; बाद में मूसा की मृत्यु पर भी लोगों ने इतने ही दिनों तक विलाप किया था (व्यव. 34:8)।

हारून की मृत्यु की कहानी बहुत महत्वपूर्ण है - यह इसलिए नहीं है कि वह इस्राएल के अगुओं में से एक थे बल्कि वह महायाजक भी थे। महायाजक की मृत्यु और नये महायाजक की नियुक्ति, इस्राएल की इतिहास की एक स्मरणीय घटना है। राष्ट्र का आत्मिक जीवन - बल्कि परमेश्वर के लोगों के रूप में उनका जीवित रहना - महायाजक की सेवकाई पर ही निर्भर करता था। यद्यपि **हारून की मृत्यु हो चुकी थी**, लेकिन लोगों को यह जानकर सांत्वना मिली कि अभी भी उनके पास परमेश्वर से मध्यस्थता करने के लिए एक महायाजक है।

अध्याय 20 एक निराशाजनक दृश्य प्रस्तुत करता हैः मरियम की मृत्यु हो जाती है, लोगों ने पानी की शिकायत की, मूसा और हारून ने पाप किया और फिर उन्हें बताया गया कि वे प्रतिज्ञा की देश में प्रवेश नहीं कर सकते हैं, एदोम वासियों ने इस्राएलियों को अपने देश में से होकर जाने न दिया और हारून की मृत्यु हो जाती है।

अनुप्रयोग

मूसा का पाप (अध्याय 20)

जंगल भ्रमण के दौरान मूसा की समस्या पढ़ने के पश्चात, हम उसके अथाह दुःख में सहभागी होते हैं जब हमें यह पता चलता है कि परमेश्वर ने उसे प्रतिज्ञा

की देश में प्रवेश करने से रोका। इससे भी बढ़कर, हम इस तथ्य से भ्रम-निवृत होते हैं कि इस परमेश्वर के महान किन्तु नम्र व्यक्ति ने पाप किया। मूसा की असफलता के बारे में सोचकर हम दुःखी न हों, लेकिन हमें इस घटना से निम्न चार महत्वपूर्ण चेतावनियों की ओर अपना ध्यान आकर्षित करना चाहिए।

1. परमेश्वर की आज्ञा ठीक-ठीक मानें। जब परमेश्वर ने मूसा को "चट्टान से बातें करने" के लिए कहा तो मूसा ने इसके विपरीत चट्टान पर लाठी मारी, और उसने परमेश्वर की आज्ञा नहीं माना। हम कहेंगे कि मूसा का इस बात में चूक जाना छोटी सी बात थी, लेकिन परमेश्वर ने ऐसा नहीं सोचा। यदि उसका वचन हमें कुछ करने के लिए कहता है तो उसके अलावा हमें और कुछ करने का हिम्मत नहीं करना चाहिए। उदाहरण, आज लोगों को उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक है। हम परमेश्वर की इस मांग के बदले और कुछ करने की अपेक्षा नहीं कर सकते हैं और उसके बाद भी उद्धार प्राप्त कर सकते हैं जो उसकी आज्ञा मानने वालों के लिए परमेश्वर उपलब्ध कराता है (इब्रा. 5:8, 9)।

2. हर बात में परमेश्वर का आदर करें। हमें हर अच्छी बातों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए। हमारे द्वारा जो परमेश्वर करता है उसका श्रेय हम नहीं ले सकते हैं और उसके लिए हम परमेश्वर की स्वीकृति की अपेक्षा करें। जैसा मूसा ने कहा, "देखों मैं क्या कर सकता हूँ," कहने के बजाय हमें यह कहना चाहिए, "देखो परमेश्वर क्या कर रहा है या उसने क्या किया है" (देखें प्रेरितों. 14:27)। हम, मसीही होने के नाते - वरन केवल मसीह के द्वारा जो हमें सामर्थ प्रदान करता है, "सब कुछ कर सकते हैं" (फिलि. 4:13)। आइये जो कुछ हम करते हैं उसमें मसीह को महिमा दें (देखें 1 कुरि. 10:31; इफि. 3:21)।

3. परमेश्वर के जैसे दयावान बनें। परमेश्वर के लोग होने के लिए, हमें उसके समान दयावान होना सीखना चाहिए। संभवतः परमेश्वर ने मूसा का तिरस्कार इसलिए किया क्योंकि उसने उसके लोगों के साथ धैर्य नहीं रखा। मूसा इस्राएलियों से क्रोधित हो गया जबकि उसको उनका भार उठाना चाहिए था। नया नियम हमसे चाहता है कि हम खोए हुओं के प्रति परमेश्वर का प्रेम बांटें और दूसरों को वैसे ही क्षमा करें जैसा वह हमें क्षमा करता है (लूका 15; देखें इफि. 4:32; कुलु. 3:13)। जैसा प्रतीत होता है कि मूसा लोगों से कठोर व धैर्य रहित था, हम भी अधिक आलोचनात्मक हो सकते हैं (मत्ती 7:1-5)। हमें कानून को अपने हाथों में नहीं लेना चाहिए।

4. इस बात की प्रतीती करें कि अच्छे लोग भी पाप कर सकते हैं और पाप का परिणाम भुगत सकते हैं। यदि मूसा ने यह माना होता कि इतने वर्षों तक परमेश्वर की सेवा करने के बाद वह पाप करने से प्रतिरक्षित है, तो वह गलत था। यदि उसने यह भी सोचा होता कि परमेश्वर के साथ उसका निकट संबंध उसे इस बात की गारंटी देता था कि वह कभी भी परमेश्वर के प्रति अप्रसन्नता का कारण नहीं हो सकता था, तो वह गलत था।

परमेश्वर कर सकता था और उसने मूसा को उसके पाप के प्रति क्षमा भी किया था। हम इस बात के प्रति इसलिए आशावान हो सकते हैं क्योंकि मूसा स्वर्ग में है

(देखें मत्ती 17:1-5)। फिर भी, मूसा को अपने पाप के परिणाम का अनुभव करना था। इसीलिए, परमेश्वर उसको पर्वत की चोटी पर ले गया ताकि वह प्रतिज्ञा किए हुए देश को देख सके, और उसमें वह प्रवेश न कर सके।

चाहे हम परमेश्वर के कितने निकट क्यों न रहे हों, चाहे हमने उसके लिए कुछ भी क्यों न किया हो, चाहे हमने कितने वर्षों तक परमेश्वर के राज्य में सेवा की हो, फिर भी, हम पाप कर सकते हैं। पौलुस ने मसीहियों को चेताया, "जो समझता है, 'मैं स्थिर हूँ,' वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े" (1 कुरि. 10:12)। जिस तरह परमेश्वर ने मूसा के पाप क्षमा किए, उसी तरह वह हमारा भी पाप क्षमा कर सकता है और क्षमा करेगा (1 यूहन्ना 1:9)। तब भी, हमें सावधानी बरतना चाहिए ताकि पाप का परिणाम हमको नुक्सान न पहुँचाए या दूसरों को दुःख न दे।

गिनती 20 पाप, मृत्यु और पराजय के एक विषादपूर्ण चित्र को प्रस्तुत करता है लेकिन आगे के कुछ अध्याय, कनान के पूर्व के कुछ देशों पर विजय की गाथा बताते हैं। अंततः एक दिन, लोग प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करेंगे। उनकी कहानी हमको यह स्मरण दिलाती है कि चाहे रात कितनी भी काली क्यों न हो, परंतु एक दिन "… सबेरे आनन्द पहुँचेगा" (भजन 30:5)। वर्तमान परिस्थिति चाहे कैसे भी विपरीत ही क्यों न हो, तब भी मसीहियों को आशा बनाए रखना चाहिए। चाहे हम इस धरती पर कुछ भी करने का प्रयास करते हुए निराश क्यों न होते हों, तौभी हमें "एक ज़मीन खुशनुमा रौनकदार, नज़र आती है ईमान ही से खास।"[7] आइए हम अपने प्रतिज्ञा की देश में प्रवेश करने की इच्छा रखें।

मरियम, एक महान इस्राएली स्त्री (20:1)

अध्याय 20 में मरियम की मृत्यु के साथ ही एक महान हस्ती का भविष्य समाप्त होता है। मरियम ने अपने भाई मूसा को जीवित रखने में सहायता की (निर्गमन 2:1-10), उसने एक भविष्यद्वक्तिन की सेवा की और इस्राएलियों का लाल समुद्र से छुटकारे के पश्चात स्त्रियों को स्तुति के गीत गाने में अगुआई की (निर्गमन 15:20, 21)। कालांतर में उसकी पहचान इस्राएल के अगुओं में हुई (मीका 6:4)। यद्यपि, उसने मूसा के अधिकार को हड़पने का प्रयास करके पाप किया (गिनती 12), फिर भी पुराने नियम में उसकी पहचान इस्राएल की महान स्त्रियों में की जानी चाहिए। वह बाइबल में स्त्रियों के महत्व का चित्रण करती है और आज उनकी महत्वत्ता के बारे में बताती है। उसकी कहानी यह प्रदर्शित करती है कि स्त्री और पुरुष दोनों पाप के शिकार हो सकते हैं (देखें रोम. 3:23; 6:23)।

मसीह, आत्मिक चट्टान (20:2-13)

पहला कुरिंथियों 10:4 में, पौलुस ने लिखा कि इस्राएलियों ने "एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ-साथ चलती थी, और वह चट्टान मसीह था।" पौलुस कह रहा था कि जब इस्राएली लोगों ने चट्टान से पानी पीया तो वे मसीह के द्वारा आशीषित हुए। चूँकि उसने उन्हें पीने

के लिए पानी दिया - लाक्षणिक रूप से या आत्मिक रूप से - मसीह वह चट्टान था जिससे उन्होंने पानी पीया था। इस वक्तव्य द्वारा पौलुस ने स्पष्ट किया कि मसीह का अस्तित्व, इस धरती पर उसके आने से पहले था और उद्धार की इतिहास में उसका भी महत्वपूर्ण भूमिका था।

जिस तरह परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिए पानी उपलब्ध कराया, वैसे ही मसीह के द्वारा, जो हमें "जीवन का जल देता है" (यूहन्ना 4:10) और जिससे "जीवन की जल की नदियां बहती है" (यूहन्ना 7:38), अनगिनत आशीषें देता है।

शांतिप्रिय लोग (20:14-21)

अध्याय 20 में इस्राएलियों का एदोम के लोगों के साथ व्यवहार यह दर्शाता है कि वे शांतिप्रिय लोग थे जो युद्ध नहीं करना चाहते थे। हमको स्मरण दिलाया गया है कि यीशु ने "मेल-मिलाप कराने वालों" पर आशीष की उद्घोषणा की है (मत्ती 5:9) और परमेश्वर के लोगों के बीच रहने वाले अन्य लोगों को शांतिपूर्ण ढंग से रहने का आह्वान दिया गया है (जैसे अब्राहम; देखें उत्पत्ति 13)। जबकि मसीहियों को "विश्वास के लिए पूरा यत्न" करने के लिए तैयार रहना चाहिए (यहूदा 3), जहां तक हो सके, भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखने का प्रयास करना चाहिए (रोम. 12:18)। विधि के अनुसार, हमें शांतिप्रिय लोग होने चाहिए, लड़ने वाले नहीं।

समाप्ति नोट्स

[1]सीन का जंगल का अन्य सन्दर्भ 27:14; 34:3, 4; व्यव. 32:51; यहोशू 15:1, 3 में उधृत है। [2]"कादेश" को "कादेशबर्ने" भी कहा जाता है (32:8; 34:4; व्यव. 1:2, 19; 2:14; 9:23; यहोशू 10:41; 14:6, 7; 15:3)। [3]फिलिप जे. बड, *गिनती,* वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, वॉल्यूम 5 (वाको, टेक्ससः वर्ड बुक्स, 1984), 218-19. [4]गॉर्डन जे. वेनहैम, *गिनती,* द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 150. [5]उपरोक्त, 151-52. [6]टिमोथी आर. एशली, *द बुक ऑफ़ गिनती,* द न्यू इंटरनेशनल कमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टमेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1993), 394-95. [7]एस. एफ. बेन्नेट, "स्वीट बाई एण्ड बाई," *सॉंग्स आफ द चर्च,* संकलनकर्ता एंव संपादक एल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुसियानाः हावर्ड पब्लिशिंग कम्पनी, 1977)।